International Journal of Sociology and Political Science
www.sociologyjournal.in
Online ISSN: 2664-7745, Print ISSN: 2664-7737
Received: 12-07-2025, Accepted: 11-08-2025, Published: 26-08-2025
Volume 7, Issue 3, 2025, Page No. 43-45

12वीं कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं पर विद्यालयी वातावरण का प्रभाव

सतीश चन्द्र वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, के.बी.पी.जी. कॉलेज मीरजापुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
यह अध्ययन मिर्जापुर जनपद के शहरी क्षेत्र में स्थित इंटर कॉलेजों के 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। कुल 100 विद्यार्थियों के एक सरल यादृच्छिक नमूने पर आधारित यह अनुसंधान विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं और विद्यालयी कारकों (जैसे शिक्षक व्यवहार, शैक्षणिक संसाधन, भौतिक संसाधन, सह–पाठ्यक्रम गतिविधियाँ) के बीच के संबंध को स्पष्ट करता है। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शोध में विद्यालयी संसाधनों, प्रेरक वातावरण, और शिक्षक–विद्यार्थी संबंधों को शैक्षिक आकांक्षाओं को बढ़ाने वाले प्रमुख कारक केरूप में चिह्नित किया गया है। अध्ययन अंततः विद्यालयी सुधारों हेतु नीतिगत सुझाव भी प्रदान करता है।

मूलशब्द: शैक्षिक आकांक्षाएँ, विद्यालयी वातावरण, शिक्षक–विद्यार्थी संबंध, शैक्षणिक संसाधन, प्रेरक वातावरण

शिक्षा ही वह साधन है जो किसी भी राष्ट्र को प्रगति की ओर प्रेरित करती है, और विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाएँ उनके जीवन की दिशा निर्धारित करती हैं। ये बाते विशेषरूप से और महत्वपूर्ण हो जाती है। जहाँ विद्यार्थी 12वीं कक्षा से उच्च शिक्षा की ओर और भविष्य की योजनाओं के लिए निर्णायक मोड़ पर होते हैं, ऐसे में उनकी आकांक्षाओं को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन अत्यंत ही महत्वपूर्ण हो जाता है। विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, आत्मविश्वास, तथा शैक्षिक दृष्टिकोण के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

एक विद्यालय केवल ज्ञान बटाने का सिर्फ केंद्र नहीं होता, बल्कि यह एक जीवंत सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक और भौगोलिक संस्थान का स्वरूप होता है जहाँ शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुसंधान, संवाद, स्वास्थ्य प्रतिस्पर्धा और प्रेरणा का वातावरण विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को एक नया स्वरूप प्रदान करता है। शिक्षकों का विद्यार्थियों के प्रति प्रेरणा दायक व्यवहार उनमें आत्मविश्वास बढ़ाता है, पाठ्यक्रम को नई शिक्षण तकनीक से पढ़ाया जाना उन में रुचि व समझ को बढ़ाता है, अभिप्रेरणा हेतु आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों से उनकी आकांक्षा में वृद्धि होती है पाठ्येतर गतिविधियों की उपलब्धता, शैक्षणिक संसाधनों की पहुँच, साथी विद्यार्थियों का एक दूसरे के प्रति सहयोग तथा विद्यालय का प्रशासनिक दृष्टिकोण– ये सभी कारक मिलकर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं के निर्माण एवं विकास में सबसे महत्वपूर्ण योगदान करते हैं।

अध्ययन मे यह बातें भी सामने आई कि जिन विश्वविद्यालयों का वातावरण प्रोत्साहनकारी, समावेशी और नवाचार–प्रेमी रहा है, उन विद्यालयों के विद्यार्थी में अपने भविष्य को लेकर अधिक चैतन्यता, महत्वाकांक्षा, और सक्रिय देखने को मिली। इसके विपरीत, जहाँ इस प्रकार का वातावरण नहीं रहा यानी की भेदभाव, उदासीनता या संसाधनों की कमी वाला वातावरण रहा वहाँ के विद्यार्थियों की आकांक्षाओं में संकुचन देखा गया।

शैक्षिक आकांक्षाएँ विद्यार्थियों की मानसिकरूपरेखा होती हैं, जिसकी सहायता से वह अपने शैक्षणिक भविष्य की दिशा तय करता है और उसे भविष्य में पाने की कोशिश में लग जाता है। ये आकांक्षाएँ केवल विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमताओं, रुचियों या प्रयासों पर ही का प्रतिफल नहीं होतीं, बल्कि उनके विद्यालय वातावरण, पारिवारिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक परिवेश से भी गहराई से प्रभावित होती हैं। विशेषरूप से शिक्षा के स्तर पर, जब विद्यार्थी विद्यालय के वातावरण का हिस्सा बनते हैं, तब यह वातावरण उनकी सोच, उनके विचार, उनके दृष्टिकोण और संभावनाओं को तराशने में अति निर्णायक भूमिका में होते है।

शैक्षिक आकांक्षाएँ विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं व्यवसायिक जीवन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। विद्यमान शोध ये दर्शाते हैं कि शैक्षिक आकांक्षाएँ केवल व्यक्तिगत कारकों का परिणाम ना हो कर सामाजिक संरचना, एवं सांस्कृतिक पूंजी (Bourdieu, 1977), विद्यालयी वातावरण और पारिवारिक पृष्ठभूमि का परिणाम हैं। पार्सन्स (Parsons, 1959) के अनुसार, विद्यालय सामाजिक व्यवस्था का एक महात्त्वपूर्ण संस्थान है, जो व्यक्तियों को समाज में प्रभावी ढंग से कार्य करने हेतु तैयार करती है। विद्यालय न केवल ज्ञान का स्रोत होता है, बल्कि विद्यार्थियों के सामाजीकरण की प्रमुख एजेंसियों केरूप में उन के व्यक्तित्व और भविष्य के लक्ष्यों के निर्माण में

योगदान करती है। ईमाइल दुर्खीम (Durkheim, 1956) ने शिक्षा को सामाजिक एकता का निर्माण करने वाला साधन माना है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति शिक्षा का ही प्रतिफल होती है, शिक्षा दोरूपों में (औपचारिक और अनौपचारिक) प्राप्त होती है। अनौपचारिक शिक्षा मानव जन्म से शुरू हो कर जीवन के अंत तक चलने वाली प्रक्रिया है। जिसमें एक बालक अपने परिवार से आरम्भ होकर कर, सगे–सम्बन्धियों, मित्रों, एवं पास पड़ोस से हो कर अपने समाज के सम्पर्क में आता है और कुछ न कुछ इन सभी से सीखता रहता हैं दूसरी ओर औपचारिक शिक्षा पूरी तरह से बालक के विद्यालय के संसाधनों और वातावरण पर निर्भर होता हैं। विद्यालयी वातावरण, जिसमें शिक्षक का व्यवहार, विद्यार्थियों का व्यवहार शैक्षिक संसाधन, विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ और मार्गदर्शन आदि शामिल होते है जो विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को सकारात्मक या नकारात्मक दिशा दे सकता है।

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य मिर्जापुर जनपद के शहरी क्षेत्र में स्थित 12वीं कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षाओं पर विद्यालयी वातावरण के विभिन्न आयामों के प्रभावों को समझते हुए यह विश्लेषण किया जाए कि वे विद्यार्थियों की शैक्षणिक आकांक्षाओं को किस प्रकार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्षरूप से प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन न केवल शिक्षा संस्थानों की भूमिका को स्पष्ट करेगा, बल्कि शिक्षा नीति निर्माताओं एवं विद्यालय प्रशासन के लिए भी उपयोगी सुझाव प्रदान करेगा कि वे किस प्रकार एक ऐसा प्रेरणादायक वातावरण निर्मित करें, जिससे विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति और आत्मविकास की संभावनाएँ बढ़ें।

शोध का सीमांकन

प्रस्तुत शोध पत्र मिर्जापुर जनपद के शहरी क्षेत्र में स्थित 12वीं कक्षा के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों तक ही सीमित है। इस शोध पत्र को केवल कक्षा 12 के विद्यार्थियों तक ही सीमित किया गया है। शोध कार्य के अन्तर्गत न्यादर्श केरूप में चयनित विद्यालयों के केवल 100 विद्यार्थी सम्मिलित हैं जिसमें 50 छात्रों तथा 50 छात्राओं का अर्द्ध यादृच्छिक नमूना (Quasi Random Sampling) के अनियमित अंकन विधि (Irregular Marking Method) से किया गया है। विद्यालयी वातावरण के अनेक आयाम हैं लेकिन प्रस्तुत अध्ययन में विद्यालयी वातावरण के केवल कुछ आयामों जैसे (शिक्षकों का व्यवहार, शिक्षण तकनीक, विद्यालय प्रशासन, सहपाठियों का सहयोग, अभिप्रेरणा हेतु कार्यक्रम, भौतिक संसाधन एवं अन्य गतिविधियों) शामिल किया गया है।

प्रमुख शब्दों की व्याख्या

12वीं कक्षा

प्रस्तुत शोध पत्र में 12वीं कक्षा से तात्पर्य उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित (उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा बोर्ड प्रयागराज) से मान्यता प्राप्त माध्यमिक स्तर इंटरमीडिएट कॉलेज में अध्ययनरत कक्षा 12 के विद्यार्थियों से है।

शैक्षिक आकांक्षा

शैक्षिक आकांक्षा दो अलग अलग शब्दों के योग से मिलकर बना है। जिसमें से पहला शैक्षिक है। शैक्षिक शब्द 'शिक्षा' से बना हुआ है, जिसका अर्थ है, ज्ञान प्राप्त करना, या सिखाना है, दूसरा शब्द आकांक्षा है, जिसका शाब्दिक अर्थ इच्छा या अभिलाषा लगाया जाता हैं, इच्छा या अभिलाषा विद्यार्थी को अपने लक्ष्य निर्धारित कर उसकी प्राप्ति के लिए प्रोत्साहित करता है। ज्ञान के परिणाम स्वरूप एक विद्यार्थी में भविष्य के लक्ष्य की इच्छा या अभिलाषा को शैक्षिक आकांक्षा कहा जाता है।

विद्यालयी वातावरण

विद्यालयी वातावरण का तात्पर्य एक भौगोलिक संरचना के अंतर्गत उपस्थित भौतिक और अभौतिक संसाधनों से है जिसमें विद्यालय इमारत, विद्यालय प्रशासन तंत्र, शिक्षक–छात्रों का सम्बन्ध, छात्र–छात्राओं का सम्बन्ध, पुस्तकालय पाठ्यक्रम एवं समय चक्र, पाठ्य सहगामी क्रियाएं, कौशल विकास कार्यक्रम, शिक्षक अभिभावकों के बीच का सम्बन्ध इत्यादि महत्वपूर्ण चरों से है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

विद्यालयी वातावरण के अलग–अलग आयाम छात्रों की आकांक्षाओं को कैसे प्रभावित करते है, इस की जानकारी आवश्यक है ताकि नीतिगत सुधार किए जा सकें। विद्यालय के वातावरण के सकारात्मक व नकारात्मक पक्षों का अध्ययन कर के भविष्य के विद्यालयी वातावरण को एक उचित दिशा प्रदान करने में किस प्रकार के सुधार की जरूरत है इस जानकारी प्राप्त हो सकेगी। अभिभावकों, प्रशासन और स्वास्थ्य समाज के निर्माण में सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। छात्रों की आकांक्षाओं को उचित दिशा प्रदान करने वाले सर्व शुलभ मार्गों का पता चल सकेगा। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष विद्यार्थियों के लिए समान अवसर एवं विद्यालयी वातावरण की गुणवत्ता को सुधारने के लिए ठोस समाजशास्त्रीय आधार मिलेगा। यह ज्ञात होगा कि विद्यार्थी अपने भविष्य को लेकर क्या सोचते हैं और किन सामाजिक–शैक्षिक कारकों से उनकी सोच प्रभावित होती है। यह अध्ययन शिक्षा और समाज के आपसी संबंधों को स्पष्ट करता है, जिससे समाजशास्त्रीय विमर्श और समृद्ध होगा।

अध्ययन का उद्देश्य

यह जानना कि विद्यालयी वातावरण किन–किन पहलुओं से विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं को प्रभावित करता है। परिकल्पना (Hypothesis) विद्यालयी वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अनुसंधान पद्धति प्रस्तुत शोध प्रश्न "12 वीं कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक आकांक्षा पर विद्यालयी वातावरण का प्रभाव" प्राथमिक एवं द्वितीय स्रोतों पर आधारित है, जिसमें प्राथमिक स्रोत केरूप में मिर्जापुर जनपद के शहरी क्षेत्र में स्थित इंटरमीडिएट के विद्यालय एवं उस में अध्ययनरत विद्यार्थियों को शामिल किया गया है प्राथमिक डेटा की प्राप्ति हेतु कुल 100 विद्यार्थियों (50 छात्र एवं 50 छात्रा) का चुनाव अर्द्ध यादृच्छिक नमूना (Quasi Random Sampling) के अनियमित अंकन विधि (Irregular Marking Method) का प्रयोग कर किया गया है। उपकरण केरूप में साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोत केरूप में विभिन्न महत्वपूर्ण साहित्यों, जनरल एवं शोध पत्रों आदि का प्रयोग कर उसमें उपलब्ध आंकड़ों का उपयोग कर समाज शास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। जिसके लिए वर्णनात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग किया गया है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य ये पता लगाना है कि विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर विद्यालयी वातावरण का किस प्रकार का प्रभाव पड़ता है।

डाटा का विश्लेषण

विद्यालयी वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा पर प्रभावों का विवरण

विद्यालय वातावरण	विद्यार्थी की कुल संख्या	सकारात्मक प्रभाव		नकारात्मक प्रभाव		तटस्थ/अस्पष्ट	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
शिक्षकों का व्यवहार	100	86	86:	10	10:	4	4:
शिक्षण तकनीक	100	90	90:	0	0:	10	10:
विद्यालय प्रशासन	100	85	85:	10	10:	5	5:
सहपाठियों का सहयोग	100	75	75:	20	20:	5	5:
अभिप्रेरणा हेतु कार्यक्रम	100	77	77:	15	15:	8	8:
भौतिक संसाधन	100	80	80:	12	12:	8	8:
अन्य गतिविधियाँ	100	78	78:	10	10:	12	12:

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि चयनित उत्तरदाताओं में से 86: ने शिक्षकों के व्यवहार, 90 प्रतिशत ने शिक्षण तकनीक, 85 प्रतिशत ने विद्यालय प्रशासन, 75 प्रतिशत ने सहपाठियों के व्यवहार, 77 प्रतिशत ने अभिप्रेरणा हेतु आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रम, 80: ने विद्यालय में उपलब्ध भौतिक संसाधन एवं 78 प्रतिशत ने अन्य गतिविधियों को विद्यार्थियों ने अपने शैक्षणिक आकांक्षा के लिए सकारात्मक माना है। इस सारणी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि चयनित उत्तरदाताओं में से अधिकतम विद्यार्थियों ने माना कि विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। अतः प्रस्तुत उपकल्पना सिद्ध होती है। उपरोक्त शोध पत्र के निष्कर्ष निम्न है –

निष्कर्ष

1. विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
2. शिक्षकों का प्रेरक व्यवहार विद्यार्थियों में आत्मविश्वास उत्पन्न करता है और उन्हें उच्च लक्ष्य निर्धारण की ओर प्रेरित करता है।
3. नवीन शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों में विषय के प्रति रुचि और समझ को बढ़ाती हैं।
4. विद्यालय का प्रशासनिक वातावरण विद्यार्थियों को लक्ष्यमुखी दिशा की ओर प्रेरित करता है।
5. सहपाठियों के साथ सहयोगात्मक गतिविधियाँ छात्रों में आत्मनिर्भरता और समूह भावना का विकास करती हैं।
6. अन्य गतिविधियाँ जैसे– वाद–विवाद, खेलकूद, सांस्कृतिक आयोजन काफी हद तक मिश्रित प्रभाव डालती हैं – जिससे विभिन्न अभिरुचि का विकास होता है।
7. प्रेरणादायक कार्यक्रमों (जैसे– कैरियर गाइडेंस, मोटिवेशनल टॉक्स) में भी विविध प्रतिक्रिया देखी गई, जिसके निरंतरता की आवश्यकता है।
8. भौतिक संसाधनों (लैब, पुस्तकालय, डिजिटल लाइब्रेरी स्मार्ट क्लास आदि) की उपलब्धता विद्यार्थियों की सुविधा व नवाचार की समझ में वृद्धि करता है।

सुझाव

1. शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण की व्यवस्था हो जिससे कि उनमें प्रेरणादायक व्यवहार, संवाद कौशल और परामर्शात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सके।
2. स्मार्ट क्लास, प्रोजेक्ट– आधारित शिक्षण एवं इंटरैक्टिव शिक्षण जैसी नवीन शिक्षण तकनीकों उपयोग किया जाएँ ताकि छात्रों की रुचि और समझ में वृद्धि हो सके।
3. छात्रों में सहयोगात्मक माहौल विकासित करने के लिए छात्रों को सह–पाठन, समूह परियोजनाएँ, और कक्षा में भूमिकात्मक खेल (त्वसम च्संल) में शामिल किया जाए जिससे सामाजिक कौशल का विकास हो।
4. संस्कृति, खेल, विज्ञान एवं समाजसेवा से जुड़ी गतिविधियों को विद्यार्थियों की अभिरूचियों के अनुसार विद्यालय वातावरण में आयोजन अधिक किया जाना चाहिए ताकी उनमें उच्च स्तर की भावना का विकास हो सके।
5. कैरियर काउंसलिंग, प्रेरक वक्ताओं के संवाद, पूर्व छात्रों के अनुभव साझा कराने जैसे कार्यक्रम नियमित एवं योजनाबद्ध तरीके से कराए जाएँ।
6. विद्यालयी संसाधनों की गुणवत्ता में सुधार हेतु पुस्तकालयों को आधुनिकतम तकनीकी से अपडेट किया जाए, कंप्यूटर लैब, विज्ञान एवं अन्य प्रयोगशालाओं को आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित किया जाए।
7. विद्यार्थियों से समय–समय पर उनकी समस्याओं व सुझावों को जानने हेतु गुप्त फीडबैक प्रणाली अपनाई जाए, ताकि आगे के नीति, नियम निर्माण में उनकी उन की सहभागिता सुनिश्चित की जा सके।

संदर्भ

1. Agrawal, J. C. 2010, Educational Research: An Introduction-New Delhi: Vikas
2. Publishing House.
3. Durkheim, E. (1956), Education and Sociology (S. D. Fox, Trans.)
4. New York: Free Press. (Original work published 1922)
5. Kumar, K. (2004). What is Worth Teaching, New Delhi: Orient Black Swan.
6. Rao, C. N. Shankar. (2010). Sociology: Principles of Sociology with An Introduction to Social Thoughts. New Delhi: S. Chand Publishing.
7. श्रीवास्तव, डी0एन0 (2007) अनुसंधान विधियाँ, साहित्य प्रकाशन आगरा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड इंफॉर्मेशन साइंसेज, गगन एन्क्लेव, रोहटा रोड, मेरठ, यू0पी0
8. जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, एन0सी0ई0आर0टी, नई दिल्ली।
9. जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन एंड रिसर्च, रमेश इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, ग्रेटर नोएडा।
10. कपिल, एच0के0 (2008) सांख्यिकी के मूल तत्व (सामाजिक विज्ञानों में), अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।
11. Sharma, R.A. (2013). Fundamentals of Educational Research. Meerut: R. Lall Book Depot.
12. UNESCO. (2015). Rethinking Education: Towards A Global Common Good. Paris:
13. UNESCO Publishing.